Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2016 = 4.44, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.48612, DEC-JAN 2018, VOL- 5/25

वित्त पोषित एवम स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं के बीएड विद्यार्थियों की उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

मंजू मिश्रा, Ph. D.

प्रवक्ता (बी० एड० संकाय), एस० एस० खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद ।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शिक्षा एक उद्देश्य पूर्ण त्रिधुर्वीय प्रक्रिया है,जिसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण ध्रुव शिक्षक है ।सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की सफलता शिक्षकों की उपलब्धि पर आधारित है।आज शिक्षा के व्यवसायी करण के परिणामस्वरूप निजी शिक्षण संस्थाओं की भरमार सी हो गई है।इन शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों को कम वेतन ,अधिक श्रम, प्रभुत्ववादी प्रबंधतंत्र तथा विद्यालयी सुविधाओं के अभाव जैसी कई समस्याओं से दो चार होना पड़ता है, जबकि वित्तपोषित विद्यालयों में इन सुविधाओं के बेहतर उपयोग के प्रति उदासीनता दिखाई पड़ती है।क्या इन विभिन्नताओं का प्रभाव दोनो प्रकार की शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर भी पड़ता है?

इसी जिज्ञासा के साथ दोनों प्रकार की शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों की उपलब्धि की तुलना करने की आवश्यकता महसूस की गई।यह अध्ययन वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं के बीएड विद्यार्थियों की उपलब्धि की तुलना करने हेतु किया गया है ।

इस अध्ययन का उद्देश्य इस प्रकार है-

1 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं के बीएड विद्यार्थियों की उपलब्धि की तुलना करना।

परिकल्पना

1 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं के बीएड विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही होता ।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन कारणात्मक, तुलनात्मक अध्ययन विधि द्वारा किया गया है।न्यादर्श में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थानों के दो

सत्रों (2015-16, 2016-17)के 50-50 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत न्यादर्शन विधि से किया गया है।

बीएड विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों को शोध पत्र में उपकरण के रूप में लिया गया है। समूहों के मध्यमानो के अन्तर की सार्थकता 'टी-अनुपात'द्वारा ज्ञात की गई है।

विश्लेषण

- **वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं के चयनित 50-50 विद्यार्थियों के सत्र 2015-16 के परीक्षा परिणामों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त मध्यमान एवं मानक विचलन के द्वारा प्राप्त 't' प्राप्तांक को सारणी-1में दर्शाया गया है।**

सारणी-1 (सत्र 2004-05)

समूह	N	M	S D	**मध्यमानो में अन्तर**	**मानक विचलन में अन्तर**	t
वित्तपोषित संस्था के विद्यार्थी	50	333.72	45.33	7.46	8.13	0.917
स्ववित्तपोषित संस्था के विद्यार्थी	50	341.18	34.44	**पूर्व के अनुसार**	**पूर्व के अनुसार**	**पूर्व के अनुसार**

बीएड के विद्यार्थियों के सत्र 2015-16 के परीक्षा परिणामों का सांख्यकीय विश्लेषण करने पर वित्तपोषित शिक्षण संस्थान के 50 विद्यार्थियों का मध्यमान लगभग 333.72 और स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्था के 50 विद्यार्थियों का मध्यमान लगभग 341.18 प्राप्त हुआ है।इसी क्रम में दोनों ही प्रकार की शिक्षण संस्थाओं के चयनित विद्यार्थियों का मानक विचलन क्रमश:लगभग 45.33और 34.44 प्राप्त हुआ है ।प्राप्त मध्यमान एवं मानक विचलन के आधार पर t का मान लगभग 0.917 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 के मान 1.99 से कम है। अत: दोनों ही प्रकार के शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- **इसी प्रकार सत्र2 2016-17 के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं के 50-50 बीएड विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों के विश्लेषण के पश्चात प्राप्त मध्यमान एवं मानक विचलन के द्वारा प्राप्त t प्राप्तांक को सारणी-2 में दर्शाया गया है।**

सारणी -2 (सत्र 2016-17)

d f= 98

समूह	N	M	S D	**मध्यमान में अन्तर**	**मानक विचलन में अन्तर**	t
वित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी	50	300.54	49.59	24.72	9.90	2.49
स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी	50	325.26	48.42	**पूर्व के अनुसार**	**पूर्व के अनुसार**	**पूर्व के अनुसार**

सत्र 2016-17 के बीएड विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों का सांख्यकीय विश्लेषण करने पर वित्तपोषित संस्था के 50 विद्यार्थियों का मध्यमान लगभग 300.54 और स्ववित्तपोषित संस्था के 50 विद्यार्थियों का मध्यमान लगभग 325.26 प्राप्त हुआ है। इसी क्रम में दोनों ही प्रकार की शिक्षण संस्थाओं के चयनित विद्यार्थियों का मानक विचलन क्रमशः लगभग 49.59 और 48.42 प्राप्त हुआ है ।प्राप्त मध्यमान एवं मानक विचलन के आधार पर t का मान लगभग 2.49 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर .05 के मान 1.99 से अधिक है, किंतु .01 सार्थकता स्तर के मान 2.63 से कम है। अतः यह मान .05 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है ।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निष्कर्ष

- **सत्र 2015-16 में वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।**
- **सत्र 2016-17 में वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यार्थियों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है।**
- **स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों की उपलब्धि वित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों से अधिक होती है ।**

सन्दर्भ

गुप्ता, एस. पी. : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन संस्करण 2007, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद ।
कपिल, एच. के. : सांख्यकी के मूल तत्व , षष्ठम संस्करण 1995, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा ।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies